पतझड़ कब तक

पतझड़ कब तक

बिशन मतवाला

प्रकाशक : शिवरतन डागाणी
आलोक प्रकाशन
कोट गेट, बीकानेर (राज०)

प्रकाशन वर्ष : 1988

मूल्य : पैंतालीस रुपये मात्र

आवरण : शांतिस्वरूप वर्मा

मुद्रक : विकास आर्ट प्रिंटर्स
रामनगर, शाहदरा, दिल्ली-32

PATJHAR KAB TAK (Poems)
by
Vishan 'Matwala'
Price Rs 45.00

मेरे आदरणीय पिता
श्री अम्बालालजी पुरोहित
को सादर समर्पित

प्रकाशकीय

श्री विशन 'मतवाला' की कृति 'पतझड़ कब तक' आपके सामने है। विशन 'मतवाला' के जीवन में भी और शब्दो में भी आक्रोश है। वे आग्नेय शब्दो के कवि हैं। विषमता को नियति मानकर स्वीकार नही करते; उसे पद-प्रहार (किंवा शब्द-प्रहार) से ध्वस्त करना चाहते हैं। उनकी कविताओं में अकृत्रिम, अनावृत सत्य है जो उन्हे सजावट और रूप-सज्जा से भले ही पृथक् कर दे लेकिन 'आस्वाद' में किसी प्रकार की मिलावट नही हो सकती। इस तरह विशन 'मतवाला' प्रबल सम्भावनाओं के कवि है।

जन-जुड़ाव उनका लक्ष्य रहा है। इस लक्ष्य की पूर्ति मे उन्हें अपना कथ्य ढूंढना नही पड़ता। अन्याय हो, उत्पीडन हो या शोषण, उनकी बेलाग कलम निर्भयता से वार करती है। शब्द की गूंज को मचो पर अधिक तेजी से गुजाते हुए वे अपनी कविताएँ पढते हैं। उनके कविता-पाठ भी उनकी एक विशेष शैली है या यों कहें कि एक निराला अन्दाज है।

विशन 'मतवाला' युवा श्रोताओ की पसंद के कवि है। अभी तक उनका दृष्टिपथ सीमित रहा है यानी आक्रोश, जोश, विध्वंस आदि की सीमाओं से परे प्रेम-व्यवहार प्राकृतिक सुषमा पक्ष तक उनकी पहुच नही हो पाई है। धीरे-धीरे कविताओं मे जैसे-जैसे परिपक्वता आती जाएगी, शिल्प-सौन्दर्य शब्द-सौष्ठव, बिम्ब-विधान एवं प्रतीक-आयोजन और अधिक सशक्त होते चले जाएँगे।

एक बात स्पष्ट है, विशन 'मतवाला' जिस चीज को नही चाहते उसे न तो मन मे छिपाते है, न चासनी मिश्रित शैली में पेश करते हैं और न अगल-बगल का रास्ता निकालकर अन्योक्ति का सहारा ही लेते हैं। वे तो प्रस्तर खण्ड की तरह 'चटोड़' देने से नही चूकते फिर चाहे वह प्रस्तर पलट कर उन्हें ही आहत क्यो न कर दे। उनकी कविताओं मे 'लुकमीचनी' का खेल नही; खुल्लमखुल्ला बात रहती है। या यों कहें कि उनमें न तो दोगलापन है, न दोहरापन।

उनकी कुछ कविताएँ तो सचमुच विस्मित करनेवाली हैं। ऐसी कविताएँ ही उन्हें आगे के लिए सशक्त सभावनाओ का कवि बनाती है। विशन 'मतवाला' का श्रोता-समाज बहुत अधिक व्यापक है, हमारा प्रयास है कि अब उनका पाठक-समाज भी व्यापक बने। उनकी कविताओ पर अधिक गहराई से चिन्तन करने की आवश्यकता है। इसी विचार के साथ यह किताब पाठको को समर्पित है।

—प्रकाशक

अपनी ओर से

लेखकों, कवियो एव कहानीकारों द्वारा अपनी कृतियो के सम्बन्ध मे मंतव्य लिखने की परम्परा रही है। उसी परम्परा की क्रमिकता को आगे बढाते हुए मैं अपने प्रथम काव्य-सग्रह मे अपने-आपको पाठको के सामने प्रस्तुत कर रहा हूँ। मैंने क्या लिखा है? उसको अपने पाठको के निर्णय पर छोडता हूँ। यों देखा जाये तो मैंने अभी तक कम ही लिखा है। इस प्रथम काव्य-सग्रह 'पतझड कब तक' का प्राक्कथन मेरे आदरणीय गुरु जी श्री चन्द्रदान चारण ने लिखा है। मै उनका कृतज्ञ हूँ। मैं श्री चारण साहब का इस रूप मे भी कृतज्ञ हूँ कि उन्होंने एव श्री बी० डी० जोशी ने मुझे पढाया-लिखाया और आज इस योग्य बनाया कि मैं अपनी लेखनी को समाज के हित में संयोजित कर पा रहा हूँ। श्री चारण साहब ने भारतीय विद्या मदिर में प्रवेश दिलवाकर मुझे प्रोत्साहित किया; फिर अध्ययन के क्रम को आगे बढाने के लिए रामपुरिया कॉलेज मे नियमित अध्ययन हेतु प्रवेश दिलाया। बोर्ड से लेकर विश्वविद्यालय तक मेरा परीक्षा-शुल्क भी उन्होने ही भरा। मेरी आर्थिक स्थिति तो अत्यन्त विषम और कमजोर थी। यह मेरे बूते के बाहर था कि मैं नियमित रूप से अध्ययन कर सकूं पर श्री चारण साहब की उदारता से आखिर अध्ययन-व्रत पूरा हुआ। मेरे 'कवि' के साथ-साथ 'व्यक्ति' के निर्माण मे भी यह औदार्य उल्लेखनीय है।

कवि सम्मेलन में मच पर लाने मे श्री भवानी शकर व्यास 'विनोद' के प्रति मैं कृतज्ञ हूँ। उन्होने मुझे हर कवि-सम्मेलन मे आगे बढ़ाया तथा मुझे प्रोत्साहित किया। मैं उनका भी ऋणी हूँ। कवि-सम्मेलन चाहे बीकानेर में हो या बीकानेर से बाहर, श्री भवानी शकरजी व्यास 'विनोद' मुझे आगे की पंक्ति मे रखते हैं। आज भी वे मुझे जहाँ-तहाँ कवि-सम्मेलन हो अवसर दिलाने में नही चूकते। मैं उनका हृदय से शुक्रगुजार हूँ। मैं अपनी मां श्रीमती चांदा देवी का आभारी हूँ—जिनके बारे मे जितना भी कहूँ या लिखूं वह थोडा है। मुझसे एक भाई बड़ा है बाकी सब छोटे है वे भी मुझे

उतना ही स्नेह और आदर देते है जितना माँ के प्रति बेटे का, भाई के प्रति भाई का, गुरु के प्रति शिष्य का हो सकता है। इसके लिए मैं उनका भी अभिनन्दन करता हूँ।

इस 'काव्य-संग्रह' को प्रकाशित कराने मे मुझे श्री भवानी शंकरजी व्यास 'विनोद' ने प्रोत्साहित किया। उन्होने कहा कि "काफी लम्बा समय हो चुका है—अब साहित्य-समाज के बीच तुम्हारी किताब सामने आनी चाहिए यह मेरी हार्दिक इच्छा है।" उनकी इस प्रेरणा से मैंने यह काव्य-संग्रह तैयार किया किन्तु किसी कारणवश प्रकाशक ने उसे नही छापा और मैं अपनी पाण्डलिपि लेकर घर बैठ गया। एक दिन ऐसे ही आकस्मिक रूप से काव्य-संग्रह प्रकाशन के सम्बन्ध में 'आलोक प्रकाशन' के मालिक श्री शिवरतन जी डावाणी व्यास गुरुजी से चर्चा चल पड़ी। उन्होने मुझे कहा कि "लाइए आपका काव्य-सग्रह मैं प्रकाशित करता हूँ। और मुझे उन्होने बेफिक्र रहने के लिए कहा। उन्होंने मुझे लम्बे समय से प्रोत्साहित किया। मैं उनके प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करता हूँ। पूर्व विधायक श्री गोपाल जोशी मेरे सम्माननीय अग्रजो एव घनिष्ठ मित्रो मे से एक हैं। उनसे मेरी लम्बी वार्तालाप होती रहती है चाहे वह साहित्यिक हो या राजनीतिक या फिर सामाजिक हो—घण्टो तक बातचीत होती है। उन्होंने भी मुझे आगे बढाने के लिए उत्प्रेरित किया तथा मेरा उत्साह बढ़ाया। *श्री गोपाल जोशी का व्यक्तित्व विलक्षण है। उनके यहाँ साहित्यकार,* पत्रकार, राजनेता, सामाजिक कार्यकर्ता आशय यह कि सार्वजनिक क्षेत्र का हर व्यक्ति आता रहता है, वे उसे अपनत्व देते हैं। ठीक इसी प्रकार से मैं भी उनका अपना हूँ और उनके प्रति कृतज्ञ हूँ। मेरे जीवन-निर्माण के प्रेरणा-स्रोत सर्वश्री स्व० मुरलीधर व्यास एम० एल० ए०, श्री सत्यनारायण पारीक, श्री चतरसिंह जी मेहता, निदेशक प्रौढ़ शिक्षा, श्रद्धेय श्री रामचन्द्र जी बोड़ा, अर्जुन भइजी जोशी तथा आकाशवाणी केन्द्र, बीकानेर आदि हैं।

सुपथिक सुपथ पर नित्य चले,
श्री चरणों में फूले फले;
शिव है जिसके रोम-रोम में,
मय प्रेम हृदय में सदा पले;

जो भी ऐसा युवक मिले,
सबको दिल वाला कहते हैं;
संघर्षों के साथी मुझको—
भी तो 'मतवाला' कहते हैं।

मैं 'टाइम्स ऑफ राजस्थान' के सम्पादक श्री अभयप्रकाश भटनागर का आभारी हूँ उन्होने मेरी हर कविता को प्रकाशित किया और मुझे उत्साहित किया। मैंने जब कविता लिखना प्रारम्भ किया तो पहले-पहल अभयप्रकाशजी ने ही मेरी कविताओ को अपने पत्र में स्थान दिया, मैं उनका शुक्रगुजार हूँ। प्रकाशन के साथ-साथ मेरा उत्साह भी बढ़ाया। खास तौर से मुझे कविता में जिस किसी ने गतिमान किया मैं उन सभी के प्रति कृतज्ञ हूँ।

श्री सुन्दरलाल आचार्य का भी मैं आभारी हूँ, जिन्होने लेखन-कार्य मे एवं कविताओं को सुव्यवस्थित रूप से करने मे मेरी मदद की।

मेरा प्रथम काव्य-सग्रह 'पतझड़ कब तक' पाठको के हाथ में है। मेरी काव्य-यात्रा का निर्णय मेरे पाठक करेंगे और वे मुझे प्रोत्साहित एव उत्साहित करेंगे। इसी उम्मीद और विश्वास के साथ अपना मतव्य यही पर समाप्त करता हूँ।

3 अक्तूबर, 1987 —विशन 'मतवाला'
सुथारो की बड़ी गुवाड़, बीकानेर

भूमिका

श्री विशन 'मतवाला' बीकानेर के नई पीढी के कवियो में एक सशक्त हस्ताक्षर है। बीकानेर मे कही भी कवि सम्मेलन हो, युवा कवि श्री मतवाला वहाँ अवश्य होंगे। यों इन्होंने राजस्थानी मे भी कुछ रचनाएँ लिखी हैं पर वे प्रधानत: हिन्दी के कवि है। काव्य के अतिरिक्त इन्होने गद्य मे भी लिखा है जो समय-समय पर विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित हुआ है।

युवा कवि 'मतवाला' का प्रस्तुत काव्य-संग्रह प्रथम होते हुए भी उनके भावी विकास की काफी सम्भावनाएँ लिये हुए है। इसमें कुछ गीत भी है। कवि ने सर्वप्रथम मगलाचरण के रूप में माँ सरस्वती की वन्दना की है। 'जय जय जय हे भारती' का स्तवन देखकर कोई यह न समझे कि कवि मध्ययुगीन हिन्दी कवियों की भाँति 'इस' या 'उस' देवता का भक्त है। 'भारती' की आरती उतारने के बाद कवि अपने वर्तमान परिवेश मे लौट आता है। उसे दिखाई पड़ता है कि चारों ओर शोषण, जुल्म, अन्याय और पीड़ा का साम्राज्य है। इसमें जरा भी मतभेद नही हो सकता कि 'मतवाला' सर्वहारा वर्ग का हिमायती कवि है। वह 'आदमखोर व्यवस्था' का स्पष्ट शब्दों मे विरोध करता है और क्रान्ति का मार्ग बताते हुए आह्वान करता है 'साथियो थाम लो मशाल' उसे यह देखकर तीव्र वेदना होती है कि 'जगती है जीवन भरने को, पर जीवन लुटता जाता है।' पर साथ ही वह पूर्ण आश्वस्त भी है कि 'जुल्म जो बढता रहा, होगी बगावत जान लो।'

देश में महँगाई, बेरोजगारी और भ्रष्टाचार को निरन्तर बढते देखकर कवि ने इनके विरुद्ध अपनी आवाज बुलन्द की है। जहाँ जीना भी दुर्लभ हो हो वहाँ कोई कैसे दिवाली मना सकता है। निराशा और दरिद्रता जहाँ नर्तन कर रही हो वहाँ कोई कैसे दीप जला सकता है। कवि ने समसामयिक समाज और उसकी समस्याओ को निकट से देखा और पहचाना है और अपनी दृष्टि से उनके समाधान का भी संकेत किया है। शोषण पर आधारित वर्तमान पूँजीवादी व्यवस्था मिटने से ही मनुष्य को मुक्ति मिल

सकती है अन्यथा तो उसकी खुशियाँ यो ही लुटती रहेगी।

'मतवाला' केवल अशिव के ध्वस का ही कवि नही, उसकी वाणी मे नव-निर्माण की प्रखर चेतना के स्वर भी है। उसके गीतो में निराशा की तमिस्रा न होकर आशा की अरुणाई है। अंधकार को मिटाना होगा, प्रकाश को आना होगा, यह कवि का दृढ़ विश्वास है। इसलिए उसका संकल्प रुकने का नाम नही लेता, वह निरन्तर गतिशीलता को ही जीवन मानता है।

कवि 'मानव' है और सच्चे मानव की प्रथम पहचान है कि वह अपनी मिट्टी से, अपनी धरती से प्रेम करे। 'मतवाला' की कुछ कविताओ मे उनकी उत्कट देशप्रेम की भावना व्यक्त हुई है। वह 'धरती हिन्दुस्तान की', 'वीरों के प्रति गीत', 'प्यारा देश हमारा है', 'जाग जवान' आदि मे विदेशी आक्रान्ताओं से मातृभूमि को मुक्त और स्वतंत्र रखने के लिए व्याकुल है। पर 'मतवाला' की राष्ट्रीयता संकीर्ण नही। वह सर्वत्र 'मानव' से प्रेम करने वाला और मानव-मानव के बीच विभिन्न प्रकार की भेद-भाव की दीवारो का भजक है।

कवि उस घड़ी की प्रतीक्षा मे है जब वर्तमान शोषण का अंधकार मिट जायेगा और पूर्व में भोर की लाली समता का नवीन प्रकाश विकीर्ण करेगी। 'मतवाला' की यह प्रथम काव्य-कृति निश्चय ही आम आदमी की तड़फन है जो आज की समाज व्यवस्था से दु खी है, निराश है और जिसे लाल सूरज के उदय होने में पूर्ण आस्था एव विश्वास है। मैं कवि को इस बात के लिए बधाई देता हूँ कि उन्होंने निर्भय होकर 'जन' की पीडा को वाणी दी है और उसकी मुक्ति का मार्ग दिखाया है। 'आज' नही तो 'कल' कवि को जन-कवि के रूप मे स्वीकार कर उसकी वाणी को आदर एवं सम्मान के साथ सुनना होगा।

राजस्थानी भाषा साहित्य सगम, बीकानेर
दिनांक : १५ अगस्त, १९८२

चन्द्रदान चारण
सभापति

अनुक्रम

जय जय जय हे भारती

[१]

शब्द-शब्द मे जादू तेरे,
छन्द-छन्द में अर्थ नये;
तुलसी सूर कबीर निराला,
तेरे ही तो भक्त रहे,
तू जननी तू करुणामय;
तू ही सबको तारती।
जय जय जय हे भारती॥

[२]

तेरी मतवाली मीरा थी,
गुंजित उसके गीत यहाँ;
उसका शाश्वत प्रेम विश्व में
ऐसी उत्तम प्रीत कहाँ ?
दिग् दिगन्त में गूज रही है
अहो तुम्हारी आरती।
जय जय जय हे भारती॥

जगती है जीवन भरने को

जगती है जीवन भरने को,
पर जीवन लुटता जाता है।
जीवन ही जीवन से टकरा,
अपनी साँस मिटाता है।

[१]

कौन कहे मानव उनको?
जिनको मानवता का भान नहीं,
दानव-सा जीवन भोग रहे,
मानवता पर अभिमान नहीं,
सिसक रहा प्रगतिवादी,
सच्चा मातें खाता है,
जगती है जीवन भरने को,
पर जीवन लुटता जाता है।

[२]

कितनी साँसें तड़प-तड़प कर,
काल-ग्रास बन जाती हैं;
कितनी आहें सिसक-सिसककर,
अपना खून लुटाती हैं;
इस दुखियारी बस्ती पर तो,
शोषण पाँव जमाता है।
जगती है जीवन भरने को,
पर जीवन लुटता जाता है।

[३]

इस काल में अकाल पड़ा है,
सूखी धरती मानव भूखा;
बचा नहीं है पानी-दाना,
हर इक क्षण लगता है रूखा,
आज मृत्यु की बाँहों में तो—
हर जीवन अकुलाता है।
जगती है जीवन भरने को,
पर जीवन लुटता जाता है।

[४]

यह झोली भोले-भालों की,
इसमें जीवन कौन भरेगा?
कौन कफ़न सर पर बांधेगा?
हँसते-हँसते मौत चुनेगा,
होगी क्या परवाह उसे?
जो अलख जगाता आता है।
जगती है जीवन भरने को,
पर जीवन लुटता जाता है।

सुपथिक

सुपथिक सुपथ पर नित्य चले,
श्री चरणों में फूले-फले;
शिव है जिसके रोम-रोम में,
मय प्रेम हृदय में सदा पले;

लाज वतन की सदा रखे,
न चूक करे बलिदानी में;
रुके नहीं झुके नही बस,
कार्य हो प्रेम हित कुर्बानी में;

जो भी ऐसा युवक मिले,
सब उसको दिलवाला कहते है,
संघर्षो के साथी मुझको
भी तो 'मतवाला' कहते हैं।

घाव बहुत ही गहरा है

पग-पग पर लगा हुआ,
उलझन का यहाँ पहरा है।
कौन समझाये दिल को जबकि
घाव बहुत ही गहरा है।।

[१]
बेईमानी करने वालों की,
लम्बी बहुत कतारें;
यहां भूख से तड़प रहे है,
कई लोग बेचारे;
लगा हुआ हर एक तरफ,
मायूसी का डेरा है।
कौन समझाये दिल को, जबकि
घाव बहुत ही गहरा है।।

[२]
हैं लाखों चोटें तन पर,
जिनको हमने सहन किया;
मुसीबतों के गट्ठर ढोये,
और दुखों को वहन किया;
सज्जनता की ओट लिये,
बैठा जुल्मी चेहरा है।
कौन समझाये दिल को जबकि
घाव बहुत ही गहरा है।।

[३]

रोटी - रोजी की खातिर,
है जंग अभी तक जारी,
इसके पीछे लड़ना है तो
करो मौत की तैयारी;
रोटी की आवाजों पर तो,
अब गोली का पहरा है।
कौन समझाये दिल को जबकि
घाव बहुत ही गहरा है॥

[४]

भारत अपना देश जहाँ पर,
जीते जी हम मरते हैं;
इस पुण्य धरा की नदियों में तो
केवल अजगर पलते है।
चोर, लुटेरों, बेईमानों का,
जगह - जगह पर डेरा है।
कौन समझाये दिल को जबकि
घाव बहुत ही गहरा है॥

कल जहाँ दीवाली थी ?

कल जहाँ दीवाली थी,
वहाँ आज दीवारें काली हैं।
अपना कहकर किसे पुकारें,
जब रात अति मतवाली है।।

[१]

कल तक थी वह सधवा नारी,
ठुमक-ठुमक कर चलती थी;
खुशियों का गुलशन था घर में,
निज मूरत पर मरती थी;
चिर सुहाग की लिये कल्पना,
वही माँग अब खाली है।
कल जहाँ दीवाली थी,
वहाँ आज दीवारें काली हैं।।

[२]

नभ-मण्डल पर आँख किये,
वह देखो अश्रु बहा रही;
मन-ही-मन कह रही कि—
मेरा कोई रहा नहीं;
प्रियतम कहकर किसे पुकारें ?
निष्प्राण देह का माली है।
कल जहाँ दीवाली थी,
वहाँ आज दीवारें काली हैं।।

[३]

नव-दीपक की चाहत का क्या?
रात बहुत अँधियारी है;
ठोकर देने वाला जग है,
घुटने की अब बारी है;
सिमट गई है खुशियाँ सारी,
अब जुल्मों की जाली है।
कल जहाँ दीवाली थी,
वहाँ आज दीवारे काली है ।।

[४]

नव-जीवन उसका जीवन नही,
चाह जिसे मिल जाने की;
अब अनन्त अनुराग कहाँ?
जो इच्छा रखे पाने की।
प्रेम-प्यार की मिटी कहानी,
आशा की टूटी डाली है।
कल जहाँ दीवाली थी,
वहाँ आज दीवारे काली है।

कैसे दीप जलायें साथी

कैसे दीप जलाये साथी,
कैसे दीप जलायें साथी।

[१]

जीना भी दुर्लभ है अपना,
रोज-रोज बढ़ती महँगाई;
बदनसीब बेरोजगार हैं,
कैसे पर्व मनाये भाई;
जहाँ गरीबी गजल सुनाती।
कैसे दीप जलायें साथी?

[२]

यह लक्ष्मी का पर्व है,
इसको लक्ष्मी-पुत्र मनायें;
दौलत की दुनिया में चाहे,
गोते खायें, जश्न मनायें!
अपने हाथ गरीबी आती।
कैसे दीप जलायें साथी?

[३]

कैसे दीपावली मनायें?
यहाँ रोज होली जलती है;
चारों ओर निराशा फैली,
दरिद्रता नर्तन करती है;

दुनिया दौलत पर इठलाती।
कैसे दीप जलायें साथी?

[४]

भ्रामक समाजवादी नारे,
कहे गरीबी तुरन्त हटाओ;
किन्तु असल में वे यही चाहते,
पूंजी लूटो मौज उड़ाओ;
तकदीरों में बदबू आती।
कैसे दीप जलायें साथी?

[५]

सरमायेदारी के साथी,
पूंजी के पिट्ठू बहुतेरे,
कई शनिश्चर लगा रहे हैं –
वर्षों से भारत पर घेरे;
जब तक उनकी चलती जाती।
कैसे दीप जलायें साथी?

[६]

इन्तजार है कभी छँटेगा,
आखिर तो सारा अँधियारा।
और कभी तो लेगा आखिर
हमसे पूंजीवाद किनारा;
जनता यदि राहत पा जाती।
तो हम दीप जलायें साथी।।
दीपावली मनाये साथी।
जग-मग ज्योत जलायें साथी।।

किस तरह मनायें दीवाली ?

जब पास नहीं फूटी कोड़ी,
क्या खाक मनायें दीवाली ?
दिल का गुलशन जब उजड़ चुका,
क्या खाक सजायें हरियाली ?

[१]

भीतर बाहर है अन्धकार,
जीवन राह कहाँ पाये,
किस तरह आवरण हटा
मुक्ति का वातावरण बना पाये ;
है यहां निराशा का पहरा,
हर समय घटायें है काली।
जब पास नहीं फूटी कोड़ी,
क्या खाक मनायें दीवाली ?

[२]

वह जीवन भी क्या जीवन है ?
जिस में कोई अनुराग नहीं,
आनन्द और उत्साह नहीं,
नव अंकुर और पराग नहीं;
तो जीवन मृत्यु समान रहे,
मायूसी करती रखवाली।

जब पास नही फूटी कोड़ी,
क्या खाक मनाये दीवाली?

[३]

हा आज देश की क्या हालत
सस्ते आँसू औ' खून यहाँ;
काँटे-ही-काँटे बिछे हुए,
फिर कैसे मिलें प्रसून यहाँ;
विश्वास पगु औ' श्रद्धा अन्धी,
उपवन का रूठ गया माली।
जब पास नही फूटी कोड़ी,
क्या खाक मनाये दीवाली?

[४]

यदि दूर निराशा हो वापिस,
मिट जाये भ्रष्टाचार अगर,
यदि श्रम की पूजा हो भारत में,
जाग उठे जो नारी नर;
तो अन्धकार यह मिटे
और दिल खोल मनाये दीवाली।
पर जब तक गुलशन उजडा है,
कैसे छिटकावे हरियाली?
जब पास नही फूटी कोड़ी,
क्या खाक मनाये दीवाली?

आदमखोर व्यवस्था

आज मृत्यु की बाहों में, अकुलाते प्राण हमारे।
आदमखोर व्यवस्था में, जीते दहशत के मारे ॥

[१]

यह अभावों की नगरी है, मिलती कहाँ रवानी;
उपदेशों के घूँट पिये जाती, बीमार जवानी;
महँगाई की पोथी पढता, बाल्यकाल बेचारा
'अ' से अभाव 'आ' से आफत यूँ चले सिलसिला सारा;
दीमक लगी अभिलाषाये, पंगु इरादों को पाती है,
अरमानों की फसल, समय से पूर्व झुलस जाती है;
किरणे फूटें तब तक उनको, निगल जाये अँधियारे
आज मृत्यु की बाहों में, अकुलाते प्राण हमारे ॥

[२]

साँस-साँस में तड़पन रहती, उद्गारों में आहें
नई चेतना को दबोचे, धूमिलता की बाहें;
थोथे नारों के गलियारो में से जाने वाले,
भार मान 'मतवाला' को, पाथेय उठाने वाले,
वातायन से झाँक रही है, युग की एक विषमता,
हर चेहरे पर खेल रही है एक दोगली ममता;
अगुवा रख के तापछाँह से, मन बहलाते नारे।
आज मृत्यु की बाहों मे अकुलाते प्राण हमारे ॥

[३]

पीढ़ी-दर-पीढ़ी अकाल के, अनुभव कई बटोरे,
हस्ताक्षर कर दे देते, आगत को कागद कोरे;
सूखे आँसू सिंचित कर, उनको इस तरह सजाये,
जब चाहे जिस समय, आँख की, कोरें तुरन्त भिगोये;
आशा विकल घाट पर सोती, खुशियाँ सदा तरसतीं,
है गुलज़ार सदैव यहाँ, पर यह मुर्दों की बस्ती;
है जुल्मखोरों के खातों में, यही खतवान प्यारे।
आज मृत्यु की बाहों में, अकुलाते प्राण हमारे॥

कहाँ हैं वे खुशियाँ ?

कहाँ हे वे खुशियाँ, कहाँ हैं बता दो ?

[१]

खुद के ये बन्दे नशे में हैं अन्धे
बेटी को बेच के खोले ये धन्धे;
कि पूंजी के आगे जवानी है सस्ती,
सलामत रहे इनकी दौलतपरस्ती,
कहाँ हैं वे खुशियाँ, कहाँ हैं बता दो ?

[२]

चमन उजड़ा है, औ' टूटी सी डाली,
सहारा नहीं है कि बेफिक्र माली;
ये आँसू की गाथा, दुःखों की कहानी,
है मायूसियों में बिलखती जवानी;
कहाँ है वे खुशियाँ, कहाँ है बता दो ?

[३]

है मानस में मन्थन, मनों में निराशा,
अँधेरा है जीवन, खुद बनता तमाशा;
अब स्वप्नों में पीडा है, अपने पराये,
जब दर्द दवा हो, तो किसको सुनाये;
कहाँ है वे खुशियाँ कहाँ हैं बता दो ?

[४]

इन सूनी सी, गलियों में, कलियां न खिलतीं,
इन विराने स्वप्नों में आशा न मिलती;
ये ठुकराया जीवन, ये मुरझाया यौवन,
समर्पित है उनको, जो कुचले चिरन्तन;
कहाँ हैं वे खुशियाँ, कहाँ हैं बता दो?

[५]

जब कुत्सित है जीवन, तो गम का बसेरा,
निराशा सुलभ है, पनपता अँधेरा,
ये माँगें सिन्दूरी, सहरों से सूनी,
अभाव मे चिन्ता भी, दिन रात दूनी;
कहाँ है वे खुशियाँ, कहाँ हैं बता दो?

[६]

हाँ! राहत मिलेगी जमाना जो बदले,
हाँ! कलियाँ खिलेंगी, जो मौसम ही मचले;
ये परिवर्तन होगा, पर डटना पड़ेगा,
तो दौलतपरस्तों को, झुकना पड़ेगा
फिर आयेगी खुशियाँ फसाने सुना दो।
यही होगी खुशियाँ जगत को बता दो॥

मैं मानव हूं

मैं मानव हूँ मुझको केवल, मानवता से प्यार है।
ऊँच नीच औ भेदभाव पर, मुझे नही ऐतबार है॥

[१]

सच्चाई धोखा खाती है,
उल्फत यूं ही मर जाती है;
इन्कलाब की पूजा करता, वैभव से तकरार है।
मैं मानव हूँ मुझको केवल, मानवता से प्यार है॥

[२]

मन चाही करते है बगले,
प्रगति कैसे होगी पगले;
सोना माटी बन जाता है, झूठों का बाजार है।
मैं मानव हूँ मुझको केवल, मानवता से प्यार है॥

[३]

अरबों के कर ये महँगाई,
अपना घर पर मिले जुदाई,
आफत की ऊपर से आँधी, चलती बेशुमार है।
मैं मानव हूँ मुझको केवल, मानवता से प्यार है॥

[४]

जुल्म जहाँ करता है नर्तन,
वादों का होता परिवर्तन;

ज्ञान शिखा की हर धड़कन पर, तलवारों का वार है।
मैं मानव हूँ मुझको केवल, मानवता से प्यार है॥

[५]

ओ, सारे मतवालो जागो,
संघर्षों से दूर न भागो;
आतंकों को आग लगाये, नजरों में अंगार है।
मैं मानव हूँ मुझको केवल, मानवता से प्यार है॥

आदमी को प्यार दे

आदमी है आदमी को, प्यार दे, दुलार दे।
करुण धार आँसुओं की, आरती उतार दे॥

[१]

मौत के आगोश मे है, प्राण आज पल रहे,
पीड़ितों की साँस के, कारवाँ निकल रहे;
एक सत्य है बड़ा, संकल्प ये महान् है,
आदमी से बढ़ के कोई, है नही जहान में;
इधर ज्वाला भूख की, तो सर्प दंश है उधर,
दिशा-दिशा शत्रु है, अब जायेंगे बच के किधर;
ये परीक्षा की घडी है, तू इसे सँवार दे।
आदमी है आदमी को, प्यार दे, दुलार दे॥

[२]

आज आँसुओं की एक करुण धार बह रही,
दर्द की ही गाथा स्वयं में, पुतलियाँ ही कह रही;
राक्षसी नाखून पैने है सभी को नोचते,
भीत त्रस्त मनुजता के जिस्म को खरोंचते;
शील जब निर्वस्त्र हो, शालीन रहता कौन है ?
श्वॉस पर है मूल्य फिर भी, एक नीरव मौन है;
कौन तोडेगा कटघरे, जो उठे हुंकार दे।
आदमी है आदमी को, प्यार दे, दुलार दे॥

भस्म मरघट की लिए है, आज सारी जिन्दगी,
यों लगे ज्यों जी रहे है, हम उधारी जिन्दगी;
झाग सागर का समेटे, इसलिए खारी है ये
किन्तु वेबसी में कह रहे है प्यारी जिन्दगी;
चेतना का बीज भूमि गर्भ में पड़ जाये तो,
उर्वरक त्याग का, अंकुर लिए चढ़ जाये तो;
लोक-शक्ति हो प्रचण्ड, ध्वस्त जुल्मों को करे,
चैन तब ही आयेगा, अलमस्त जब मानव फिरे;
हम प्रतीक्षा में रहेगे, एक दिन तो आयेगा,
मानवी गौरव का झण्डा, शान से लहरायेगा,
जुल्म दहशत को मिटाये, जमके ठोकर मार दे।
आदमी है आदमी को, प्यार दे, दुलार दे॥

बुझ चुका हृदय का ही दीपक,
किस तरह मनाऊँ दीवाली ?

जब जीवन जीवन ही न रहा, न गुल ही रहा न गुलशन ही,
पग-पग पर काँटे बिखर गये, हो गई हवा भी गुमसुम सी;
पतझड़ ने लूट बहारो को, मरियल सी कर दी हरियाली,
बुझ चुका हृदय का ही दीपक, किस तरह मनाऊँ दीवाली ?

देखते देखते ही नभ मे, नक्षत्र निराला टूट गया,
लो इस दुखियारी बस्ती का, अब भाग्य भास्कर डूब गया,
पग पग पर छायी अँधियारी, तो सुलभ कहाँ हो खुशियाली।
बुझ चुका हृदय का ही दीपक, किस तरह मनाऊँ दीवाली ?

फीके चेहरों की स्वादहीन भाषा में आज थकावट है,
आशंका डगर-डगर में है, चुप्पी तक मे घबराहट है,
ढके चूल्हे को देख-देख, सिसक रही खाली थाली।
बुझ चुका हृदय का ही दीपक, किस तरह मनाऊँ दीवाली ?

रातें डरावनी लगती है, आभा की छाती में कीलें,
हो रहे हाथ ठंडे-दर-ठंडे, चेहरे लगते पीले-पीले,
इस घटाटोप के बीच, उमड़ती जायेगी बदली काली।
बुझ चुका हृदय का ही दीपक, किम तरह मनाऊँ दीवाली ?

वीरों के प्रति

वीर भूमि वीरों को, कोटिशः प्रणाम है।
इन पर न्यौछावर सदा, तन मन औ' प्राण है॥

[१]

इस धरा के वीरवर,
शत्रुओं के काल है;
मौत से नही डरें ये—
भारती के भाल है,
मिटा के अपनी जिन्दगी, देश पर कुर्बान है।
वीर भूमि वीरों को, कोटिशः प्रणाम है॥

[२]

इनके रक्त में सदा,
ज्वाल सा उबाल है,
हौसले में है हिमालय,
पाँवों मे भूचाल है;
ये प्रकाश विम्ब, इनकी ज्योति हिन्दुस्तान है।
वीर भूमि वीरों को, कोटिशः प्रणाम है॥

[३]

इन जवानों पर हमें,
विश्वास है अभिमान है;
जब पड़े संकट यहाँ,
करते रहे बलिदान हैं;

इनका जीवन धन्य है, ये स्वयं ही तूफान है।
वीर भूमि वीरों को, कोटिशः प्रणाम है॥

[४]

जुल्म होते हैं जहाँ,
आँखों में ज्वाला पले;
सर कफन बाँध के—
निकले हमारे मनचले;
मर के आजादी बचाएं शूरमों की शान है।
वीर भूमि वीरों को, कोटिशः प्रणाम है॥

धरती हिन्दुस्तान की

वीर प्रसविनी धरा पुण्य, यह धरती हिन्दुस्तान की।
लुटता हो गर गौरव इसका, वह वेला अभियान की॥

[१]

ओ भारत के वीर सपूतो,
अपनी निद्रा त्यागो;
शत्रु द्वार पर आन खड़ा है,
जाग जगाओ जागो;
यह वह धरती है जिसकी खातिर, बाजी खेली प्राण की।
वीर प्रसविनी धरा पुण्य, यह धरती हिन्दुस्तान की॥

[२]

तुम सब वे हो जिन्होंने,
इस की आन रखी है,
काट जुल्म की सीमाएँ,
अपनी शान रखी है;
बोल उठे सब कोटि-कोटि स्वर, जय विजय संतान की।
वीर प्रसविनी धरा पुण्य, यह धरती हिन्दुस्तान की॥

[३]

यह वह धरा है जहाँ वीरों ने,
सर्वस्व अपना त्याग दिया;
भारत माँ के बेटों ने—
जिसके हित बलिदान दिया;

तन मन धन सब करे न्यौछावर चादर स्वाभिमान की।
वीर प्रसविनी धरा पुण्य, यह धरती हिन्दुस्तान की॥

[४]

आतंकित जब हुई धरा तो,
फैली जौहर ज्वालाएँ;
जोश में आए बच्चे लेकर,
कुर्बानी की मालाएँ;
परवाह नही अब करते कोई, भले बुरे अंजाम की।
वीर प्रसविनी धरा पुण्य, यह धरती हिन्दुस्तान की॥

•

साथियो थाम लो मशाल

साथियो थामलो मशाल।
साथियो थामलो मशाल॥

[१]
राहों में काँटे बिछे हों चाहे हो तूफान,
बढते रहो वीरवर ले हथेलियों में जान;
कदम-कदम पर उठे भूचाल।
साथियो थाम लो मशाल॥

[२]
शौर्य भूमि के लाल, न भूलो साँगा और प्रताप,
मिला विरासत में साहस, वैसा ही प्रचण्ड ताप;
बढो रिपुओं का बनकर काल।
साथियो थाम लो मशाल॥

[३]
देश-प्रेम में पगो, मिटाओ व्यापक भ्रष्टाचार,
आँधियों से टक्कर लो, करते जाओ हुंकार;
कि हम हैं भारत की नव-ज्वाल।
साथियो थाम लो मशाल॥

साथी चलो

चलो चलो चलो, साथी चलो।

[१]

साँसों सी गतिमान जिन्दगी है,
जिसमें अथाह गहराई है;
पुष्पित और पल्लवित शोभा,
जगह-जगह तरुणाई है;
झर-झर झरनों से चलो।
चलो चलो चलो, साथी चलो॥

[२]

चलता है सूर्य चलती है शाम,
जिन्दगी को करे अविराम!
पवन चले जल चले धरा भी—
नही तनिक विश्राम;
लौह पुरुष की तरह बढो,
तुम बढते ही चलो।
चलो चलो चलो, साथी चलो॥

[३]

ले जान हथेली में चलो,
लो संकट में प्राण चलो;

हाथों में अरुणिमा लिये,
मन में ले त्राण चलो;
रोटी का संघर्ष कर के, गतिमान चलो।
चलो चलो चलो, साथी चलो॥

[४]

रण तिलक लगा के बढ़ो,
उन्नति सोपान चढो;
खुद इतिहास बनो तुम,
यारो हक के खातिर लडो;
व्यर्थ की दुविधा छोड चलो।
चलो चलो चलो, साथी चलो॥

ये ज़मीं महान्

ये जमी महान् है, ये जमीं महान्।

जन्म से हर जीव को,
पालती है ये जमीं;
दीन दलित वर्ग को
सम्भालती है ये जमीं;
इसकी हर दिशा भी, ये कर रही आह्वान।
ये ज़मी महान् है, ये जमीं महान्॥

इस के अंग-अंग में,
राम और श्याम है;
इसके चारों ओर हो,
स्वर्ग तुल्य धाम है;
लहलहा रहे धरा पे, खेत औ' खलिहान्।
ये जमीं महान् है, ये ज़मी महान्॥

आशाओं को पूर्ण कर,
पालती है ये धरा;
इसपे हमें नाज है,
ये उर्वरा वसुन्धरा;
आज भूमि को कहे, गर्व से जहान्।
ये ज़मी महान् है, ये जमी महान्॥

चलना ही होगा

नव-निर्माण राह में साथी, चलना ही होगा सत्वर।

आज नवीन वेला में, करना है नव-निर्माण तुम्हें,
शोषित उत्पीडित लोगों में, भरना चेतन प्राण तुम्हें;
राहों में उत्पन्न हो, चाहे, बाधायें-ही-बाधायें,
ठोकर देकर करो चूर, चाहे हो कितनी विपदायें;
बढ़ना है आगे तुमको, निर्भय ज्वालाओं मे चलकर।
नव-निर्माण राह में साथी, चलना ही होगा सत्वर।।

जीवन भी गर उलझन-ही-उलझन में तुमको उलझाये,
याकि सरो पर मौत यहाँ, आकर के चाहे मँडराये;
राहों में तूफान भले ही, पथ में कोई शूल बिछाये,
या जल की उत्ताल तरगे, खडी कर रही हो बाधायें;
भस्मी भूत हो जायेंगी वे, जब होगा विश्वास स्वय पर।
नव-निर्माण राह में साथी, चलना ही होगा सत्वर।।

आगे बढ़ते रहने से ही, जन-जन जीवित रहता है,
नही समस्याओं से डरता है, जो कुछ आये सहता है;
चाहे नैराश्य निशा आये, लेकर जीवन मे अन्धकार,
पग-पग पर रोड़े-ही-रोड़े, रखते जायें सर्वाधिकार;
पर क्रान्ति पथिक आगे बढ़ता, उसकी नियति यही प्रखर।
नव-निर्माण राह में साथी, चलना ही होगा सत्वर।।

चले चलो

चले चलो अविरल।
पायें नव मंजिल।।

[१]

धूप हो या छांह हो,
आग उगलती राह हो;
सीमाओं के सभी सपूतो,
डटे रहो अविकल।
चले चलो अविरल।।

[२]

घोर घटा अँधियार हो,
या आफत बेशुमार हो;
खून पसीना त्याग कभी भी,
होता न निष्फल।
चले चलो अविरल।।

[३]

हर आदम को साथ ले,
जन-जन की आवाज ले;
एक सूत्र में बांध के,
चले चलो अविचल।
चले चलो अविरल।।

[४]

महकाये मेहनत को हम,
महकाये उपवन को हम;
परिश्रम के पकज खिला,
फिर मस्ती का हर पल।
चले चलो अविरल॥

करनी-कथनी में अन्तर हो...?

करनी-कथनी में अन्तर हो,
उनको क्या स्वीकारें?

ये आसमानी योजनाये,
खाने वाले हाथी।
बड़े-बड़े है पेट जिनके,
वो क्या होंगे साथी?

हड़प रहे जनता की दौलत,
वो क्या कभी हमारे?
करनी-कथनी में अन्तर हो,
उनको क्या स्वीकारें?

भूखों मरती आजादी,
रोटी के पड़ते लाले!
जिनके दिल में सच्चाई है,
उनके मुंह पर ताले।

मनचाही करने वालों की,
लम्बी खड़ी कतारें।
करनी-कथनी में अन्तर हो,
उनको क्या स्वीकारें?

देश-भक्ति का जामा पहने,
ये कैसे अवतारी?

भाषण, चाटन, उद्घाटन की,
फैलाते है महामारी।
कुर्सी की खातिर करवा दें,
ये खूनी तकरारें।
करनी-कथनी में अन्तर हो,
उनको क्या स्वीकारें?

इनके कोठी-बँगलों पर,
लगे हुए हैं टाटे।
डसने वाले ये विषधर,
जो पग-पग लोहू चाटे।
खून चूसने वालों की है,
लम्बी आज कतारें।
करनी-कथनी में अन्तर हो,
उनको क्या स्वीकारे?

कुर्सी पर बठे, उनसे पूछो,
कितने हो बलिदानी।
क्या जनता की सेवा की है,
क्या की है कुर्बानी।
त्याग, तपस्वी, सेवाभावी,
उन पर सब कुछ वारें।
करनी-कथनी में अन्तर हो,
उनको क्या स्वीकारे?

श्रम पुजारियो उठो

श्रम पुजारियो उठो, ओ क्रान्तिकारियो उठो।

[१]

आ गया है वक्त, तुम मशाल थाम लो,
आ गया है वक्त, तुम कफन बाँध लो,
क्रान्तिनाद करने को, इन्कलाबियो उठो।
श्रम पुजारियो उठो, क्रान्तिकारियो उठो ॥

[२]

तूने ही रखी है शान, अपने इस देश की,
काट जुल्म की सीमा, रखी आन देश की,
जुल्म मिटाने के लिए, देशवासियो उठो।
श्रम पुजारियो उठो, क्रान्तिकारियो उठो ॥

[३]

तेरे ही पसीने से, होता नव-निर्माण रे,
तेरे ही पसीने में, नव जिन्दगी की तान रे;
देश हितकारियो उठो, श्रम पुजारियो उठो।
क्रान्तिकारियो उठो ॥···

[४]

श्रम से सजी है बहार, श्रम में ही गुलजार है,
श्रम से किया काम तो, जिन्दगी मे सार है;
राष्ट्रहितकारियो उठो, श्रम पुजारियो उठो।
क्रान्तिकारियो उठो ॥···

[५]

बागडोर देश की, अब तुम्हारे हाथ है,
नौजवान बढ़ चलो, सारा मुल्क साथ है;
क्रान्ति अभियान में, कर्मचारियो उठो।
श्रम पुजारियो उठो, क्रान्तिकारियो उठो ॥

प्यारा देश हमारा है

यह प्यारा देश हमारा है, यह सारे जग से न्यारा है।

उत्तर में है यहाँ हिमालय,
जो इसका रखवारा है;
लहरों संग लहराता सागर;
दक्षिण को वह प्यारा है;
मानसून का मौसम जो, इसकी आँखों का तारा है।
यह प्यारा देश हमारा है, यह सारे जग से न्यारा है।।

इस पर लाखों फूल खिल रहे,
यहाँ झूमती कलियाँ है;
यहाँ कई मधुवन हैं,
कितनी ही रसवन्ती गलियाँ है;
आन पड़ी विपदाएँ कितनी, यह कब किससे हारा है।
यह प्यारा देश हमारा है, यह सारे जग से न्यारा है।।

इस धरती का वीर सिपाही,
शान्ति का रखवाला है;
आतंकों में जीवटवाला,
युद्धों में मतवाला है;
इस धरती के कण-कण ने, जब-तब अपना रूप सुधारा है।
यह प्यारा देश हमारा है, यह सारे जग से न्यारा है।।

यह वह धरती है जहाँ सूर्य का,
अनुपम तेज दमकता है;

सदा परिश्रम का पंकज,
प्रत्येक हृदय मे खिलता है;
इस धरती के वीरों का, यह अनुपम राष्ट्र दुलारा है।
यह प्यारा देश हमारा है, यह सारे जग से न्यारा है॥

गगा-यमुना जैसी नदियाँ,
इसको शोभा देती हैं;
ऋतुएँ कर शृगार यहाँ,
अपनी सौरभ भर देती हैं;
यह गौरव है, यह गरिमा है, यह अभिमान हमारा है।
यह प्यारा देश हमारा है, यह सारे जग से न्यारा है॥

कोटि-कोटि जुग जीये जग में,
ऐसा देश हमारा है;
लहरो सम लहराये तिरंगा,
यह जन-जन का नारा है;
सदा समुन्नत रखे इसको, यह संकल्प हमारा है।
यह प्यारा देश हमारा है, यह सारे जग से न्यारा है॥

फिर से मौका आया है

वोट डालने की खातिर, फिर से मौका आया है।

[१]

धर्म हमारा कहता है कि, सबको सुखी बनायेंगे,
घर-घर से आवाज यही कि नई जिन्दगी लायेंगे,
जो अपाहिज रहे अभी तक, उनका मान बढायेंगे,
रोटी सब को मिल जाये, बस ऐसा गीत सुनायेंगे,
भाषण-मालाओं का अन्धड़, घिर-घिर फिर से छाया है।
वोट डालने की खातिर, फिर से मौका आया है॥

[२]

जिनको चुनकर हमने भेजा, उन्होने गुमराह किया,
अपने खर्चे खूब बढ़ाये और देश को स्वाह किया,
परमारथ के धौंसें देकर, गाँवों को बदनाम किया,
झूठा बाना पहन जनता को, ऊचा फरमान दिया,
सोच-समझ लेना है उनको, जिन्होंने यह भरमाया है।
वोट डालने की ख़ातिर, फिर से मौका आया है॥

[३]

जो इतिहास बना है अब तक, वह इतिहास न बन पाये,
स्वर्ग बनाने वालों का, पैगाम कहीं न ढल पाये,
काँटों में जो फूल खिले है, उनके बीज न गल पाये,
अगुवेपन का स्वांग रचाते, वर्ग न हमको छल पायें,

अरमानों की अंगीठी का, फिर शोला गरमाया है।
वोट डालने की खातिर, फिर से मौका आया है॥

[४]

जिनको दान बहुत प्यारा है, उनकी करनी रखवाली,
उपयोग करे अपने मत का, घर मालिक या घरवाली,
सबसे मीठी बात करें, वह सुन ले जो देवे गाली,
भारत को चमन बनायें, झूम उठे बन का माली,
भाग्य विधायक मस्तानों के, दिल मे जोश समाया है।
वोट डालने की खातिर, फिर से मौका आया है॥

जाग जवान

जाग जवान देश की, तुमको तकदीर बदलनी है।
क्षत-विक्षत है मातृभूमि, इसकी तस्वीर बदलनी है॥

[१]

भारत अपना देश न जाने,
कैसा बनता जाता है;
भुखमरी, दरिद्रता अशिक्षा
से ही इसका नाता है;
चिन्ताजनक दशा है लेकिन, अब प्रणवीर बदलनी है।
जाग जवान देश की, तुमको तकदीर बदलनी है॥

[२]

जीवन में मधुमास नही,
उपवन में बहार नही;
कलियाँ कोमलता से वंचित,
अब कुदरत में भी प्यार नहीं;
तुम पर है आशायें केन्द्रित, तुमको तदबीर बदलनी है।
जाग जवान देश की, तुमको तकदीर बदलनी है॥

[३]

देशद्रोहियों मक्कारों,
तस्कर वालों का है जाल यहाँ,
पूजीपतियों, दुष्ट, दलालों के-
हाथों में है माल यहाँ;

आज रोग नहीं, रोग वाली तासीर बदलनी है।
जाग जवान देश की, तुमको तकदीर बदलनी है ॥

(४)

मानव की मानवता के,
पग-पग बैठे खूनी है;
कैसे जिये समस्या है,
कठिनाई दिन-दिन दूनी है;
घिसी-पिटी इस परम्परा की, आज लकीर बदलनी है।
जाग जवान देश की, तुमको तकदीर बदलनी है ॥

क्या कहें कुन्बा हमारा

हो रहा विघटन निरन्तर
भय हमेशा खा रहा।
क्या कहें कुन्बा हमारा,
स्वयं लुटता जा रहा।।

हर प्रश्न का उत्तर ही बस,
प्रश्न होता है यहाँ,
इन्सानियत से हर घड़ी,
खिलवाड़ होता है यहाँ;

आरोह कम अवरोह ज्यादा,
त्रास होता है यहाँ;
विषमताओं की महामारी का,
संत्रास होता है यहाँ;

दबी जा रही आवाज
औ' घर उजड़ता जा रहा
क्या कहे कुन्बा हमारा,
स्वयं लुटता जा रहा।।

आज़ाद भारत देश में,
दीन-हीन हतास है;
बँगले यहाँ आबाद हैं;
झोपड़ियाँ निराश हैं;

नेतृत्व में है कोरा दिखावा
खोखलापन है देश में;
गफलत में है लोग सारे,
औ' जीवन सारा क्लेश में;

पंगु कुंठित इरादों को,
श्मशान अब सुलगा रहा।
क्या कहें कुन्बा हमारा
स्वय लुटता जा रहा॥

भुखमरी व्यापक और—
गरीबी का यहाँ माहौल है,
इतिहास से अब पाठ उल्टा
पढ़ रहा भूगोल है;

भावना का भ्रूण शका-
युक्त अजन्मा रहे,
वैषम्य का परिवेश है तो,
जन्म चौकन्ना रहे;

दोषहीन लोगों को क्रूर
भंजक सा दिखला रहा।
क्या कहे कुन्बा हमारा
स्वयं लुटता जा रहा॥

खून सने हैं पृष्ठ किन्तु

लाख करोड़ों की आहों पर, दो मुस्कान विछाये।
खून सने हैं पृष्ठ किन्तु, स्वर्णिम इतिहास कहाये ।।

[१]

ये इतिहास विजेताओं का, कहाँ सत्य से नाता,
लाखों सपने चूर हुए, तब ताजमहल बन पाता;
सदा सुहागों से खेले, जो लोग पाशविक होली,
यश की नीलामी में खुलती आई उनकी बोली;
आहों का सौदा करते, सपनों को चूर गिराते,
कालान्तर में मिली भगत से, वे महान् बन जाते;
झूठ और मक्कारी में, जो जितना ऊंचा जाये,
चापलूस इतिहासकार, उसको सर्वोच्च बताये;
लिखी कहाँ किसने, इतिहासों में रोटी की गाथा,
भूख-प्यास के लिए, कलम से किसने जोडा नाता;
इतना सब कुछ होने पर भी, शर्म कुछ नही आये।
लाख करोड़ों की आहों पर, दो मुस्कान विछाये।
खून सने हैं पृष्ठ किन्तु, स्वर्णिम इतिहास कहाये ।।

[२]

चाँदी के अतीत पर, स्वर्णिम वर्तमान विछाते,
कलाकार, कवि, वक्ता, नेता, दरबारी बन जाते;
जिनका स्वार्थ नही सधता, उनकी चिल्लाहट जारी,
अवसर मिलते ही वे भी, करने लगते मक्कारी;

नहीं चूकते करने में कब्रों की सौदेबाजी,
शोषक को दे साथ, शोषितो को देते लफ़्फाजी;
गलत तरीकों से जो उल्लू सीधा कर जायेंगे;
वे भविष्य की रद्दी की टोकरियों में जायेंगे;
अपराधी है किन्तु नही जो शोषण से चूकेगा,
आगे का इतिहास नाम लेकर उस पर थूकेगा;
साथ गरीबों का कहकर जो गद्दारी कर जाये,
ऐसे नमक हराम नारकी कीड़े ही कहलाये।
लाख करोड़ों की आहों पर, दो मुस्कान बिछाये।
खून सने है पृष्ठ किन्तु, स्वर्णिम इतिहास कहाये ॥

[३]

सत्ता का इतिहास तास ज्यो खुद ही ढह जायेगा,
वालू के घर मे कोई, कब तक रहने पायेगा ?
ये सुहाग के दुष्ट लुटेरे, राखी के ये हत्यारे,
दिव्य चूडियों के सौदागर, सत्ता के हलकारे;
पूंजी के दरवान् चापलूसी पर पलने वाले;
अपने कर्मो वाक्यों से, सबको ही छलने वाले;
कैसे दुष्ट नारकी जो, इतिहास पुरुष कहलाये,
अच्छा हो सडकों पर, वह इतिहास जलाया जाये;
शासन, सत्ता, पूजी जो भी गरीब से टकराई,
कितनी भी ताकत हो उसने, आखिर मुह की खाई;
तीसमारखाँ साठमारखाँ, मन में कुछ बन जाये,
पर भविष्य की ठोकर लगते ही, चूर-चूर हो जाये:
लाख करोड़ों की आहों पर, दो मुस्कान बिछाये।
खून सने है पृष्ठ किन्तु, स्वर्णिम इतिहास कहाये ॥

बग़ावत

ज़ुल्म जो बढ़ता रहा, होगी बगावत जान लो।
क्रान्ति आयेगी तभी, इसको सदाकत मान लो।।

[१]

क्या कभी रोके रुका है ज्वार, वह तो आयेगा,
आतताई जो भी हो, सरकलम हो जायेगा;
वे इरादे ध्वस्त होंगे, जो सभी को नोचते,
मासूमियत से खेलकर, जजबात को दबोचते;
कारवाँ अब चल पड़ा, होगी कयामत जान लो।
ज़ुल्म जो बढ़ता रहा, होगी बगावत जान लो।

[२]

फूल का यौवन मसलना, यूं तो बस आसान है,
लूटना कलियों को चाहे, आपका अभिमान है;
शान्त जब तक है तभी तक, है तुम्हारी जिन्दगी,
जिस समय हम मचल जायें, तुम समझना मौत ही;
उठ गया तूफान तो, सर पर ही आफत मान लो।
ज़ुल्म जो बढ़ता रहा, होगी बगावत जान लो।।

[३]

कर नजरबन्द भोर को, औ' उजाला मारकर,
हर सत्य की तस्वीर से, मखौल का व्यवहार कर;
पंगु कर के रख दिया, ईमान को तुमने यहाँ,
और गूँगा कर दिया, हर विश्वास को तुमने यहाँ;

जो शराफत थी हमारी, सरपर ही आफत मान लो।
जुल्म जो बढ़ता रहा, होगी बग़ावत जान लो ॥

[४]

जाति का फैला जहर, फिरकापरस्ती घोल दी,
मूर्तियाँ गांधी की रख, हर जगह जय बोल दी;
पाप ढकने स्वयं के, खादी का पर्दा ले लिया,
औ' साम्प्रदायिक जहर पर, इन्सानियत को दे दिया,
अब न होगी आपकी कोई हिफाजत जान लो।
जुल्म जो बढ़ता रहा, होगी बगावत जान लो ॥

[५]

अब तुम्हारे खौफ की, अर्थी उठाई जायेगी,
अब तुम्हारे जुल्म की, धज्जी उड़ाई जायेगी;
फूल अंगारे बनेंगे, चटक कलियाँ जायेंगी,
ऋतुएँ तुम्हारी मौत का, पैगाम लेकर आयेंगी;
जन राज्य में फिर से यहाँ, होगी अदावत जान लो।
जुल्म जो बढ़ता रहा, होगी बग़ावत जान लो ॥

आगे बढ़ना है राही

आगे बढ़ना है राही,
मंजिल चाहे दूर हो;
आज कदम की भाषा,
धरती को मंजूर हो ॥

[१]

राहों में काँटे बिछे हुए हों,
लेकिन क्या परवाह ?
सदा क्रान्तियाँ चुनती रहतीं,
अपनी अपनी राह;
जहाँ-जहाँ उत्पीड़न होता,
मानवता का नाश,
वहाँ-वहाँ लिखा जाता,
युग का नव-इतिहास,
जिसकी पृथक् व्याकरण होती
जिसकी निश्चित चोट,
झंझा में युग बोध की—
क्रिया में होगा विस्फोट;
कोई न गूंगा वहरा समझे,
न समझे मजबूर हो,
आगे बढ़ना है राही,
मंजिल चाहे दूर हो।

[२]

सांस-सांस में तड़पन है,
कदम-कदम गतिमान्;
इसे आपको देना होगा,
परिवर्तन का नाम;
विस्थापित मंसूबों को,
है देना हमें निवास;
षडयन्त्रों को देना होगा,
अब लम्बा कारावास;
गान्धारी आजादी लेकर,
स्वयं बने धृतराष्ट्र,
गलत बयानी के संजय को,
ऊँचा किया विराट;
किन्तु शिरायें आन्दोलित थीं,
धमनी में थी आग,
लगातार होती जाती थी
बस एक क्रांति की मांग
मूर्त्त रूप दे दिया अगर,
तो रक्षा जरूर हो,
आगे बढ़ना है राही,
मंजिल चाहे दूर हो।

[३]

दलित वर्ग जागेगा तो,
क्या होगा अंजाम,
तभी मार्क्स लिखेगा चिट्ठी,
गांधी जी के नाम,
मेरे सभी विचार आपके
संघर्षों के साथ,
एक क्रान्ति को जन्म दे रहे,
मिला हाथ में हाथ,
मिटा सके जो जुल्म को,
खोजो वह इन्सान,

जबड़ों को भी खण्डित कर दे,
उस मुट्ठी की पहिचान;
ये सब तुमको करना होगा,
धरती के तुम नूर हो,
आगे बढ़ना है राही,
मंजिल चाहे दूर हो॥

[४]

हरियाली का शील हरण कर
पतझर में उल्लास,
नंगे वृक्षों को देना है,
तुमको अब मधुमास;
काल चक्र को कभी न आता,
यह आडम्बर रास,
निपट दोगलेपन को,
अब देना होगा बनवास;
लपटें अगर सामने आतीं,
तो मिलना होगा मित्र,
लपटों से सीता, प्रह्लाद,
दोनों ही हुए पवित्र;
अब विलम्ब का समय नहीं है।
टक्कर ही भरपूर हो॥
आगे बढ़ना है राही,
मंजिल चाहे दूर हो॥

लड़े कलम से कौन

पग-पग पर काला बाजार,
जगह-जगह पर भ्रष्टाचार।
फिर भी रामराज्य का देखो,
धुंआधार कर रहे प्रचार॥
अन्जाने में करते तो नादानी है, पर जान-बूझ करे तो शैतानी है।

ये सारे शैतान सभी हैं, नामी बेईमान,
हरामी होते ये हैवान, थूकता इस पर सकल जहान;
दिखने में तो दिखते ये फौलाद है,
लेकिन भीतर-ही-भीतर कायर होते ये—
बड़े चिलमियों चमचों की औलाद है;
राजनीति का प्रश्रय पाकर सरेआम गुण्डे फिरते,
भूखे है भगवान किन्तु, मन्दिर में पण्डे चरते;
राम-नाम का शोर यहाँ, हर व्यापारी चोर यहाँ,
दुष्ट लोग कानून तोड़ते, बनते सीनाजोर यहाँ;
कुर्सी जिसे मिल गई, उसने लगा लिया है गरुड़ासन,
इस सामन्ती प्रजातन्त्र मे, चले कुटुम्ब का ही शासन;
जनता के लिए जेवड़ियाँ है, घरवालों के लिए रेवड़ियाँ हैं;

ये ऐसा मत्र बनाते है,
प्रजातन्त्र के कपड़ों मे
मर्जी का तन्त्र चलाते हैं;
आजादी पर इनकी घात पुरानी है, सच पूछो तो पुस्तैनी शैतानी है।
अन्जाने में करते तो नादानी है, पर जान-बूझ करे तो ये शैतानी है।

रेलों में मर्यादायें तोड़ी जातीं,
जेलों में आँखें तक फोड़ी जातीं;
आयकर बिक्री कर चुंगी में भ्रष्ट शिकंजा है,
रक्षक कहलाती पुलिस यहाँ लेकिन,
अपराधों में भी उसका खूनी पंजा है;
बाहर से ये सलावटे घोड़े अरबी,
वनस्पति में मिलती है गायों की चर्बी;
जनता है आहार यहाँ पर खुला भ्रष्टाचार,
सत्य की ओट लिये शैतान लगाते हैं दरबार;
हम तो कवि हैं सबका भण्डा फोड़ेंगे,
शैतानों के जबड़ों को तोड़ेंगे;
सर्पों के फन को तोड़े वो ताकत है,
लड़े कलम से किसकी यहाँ हिमाकत है;
ऐसा करे प्रहार, नष्ट हो भ्रष्टाचार,
मुखौटे चूर-चूर हो जाये, वक्त जब खुद कर बैठे वार,
फिर भी जो करना चाहे मनमानी है,
समझो कि अब इनकी खत्म कहानी है;
हम जनता के सजग पहरवे, अन्धकार की ताकत तोड़ गिरानी है।
अनजाने में करते तो नादानी है, पर जान बूझ करे तो शैतानी है ॥

चलना है अंगारों पर

चलना है हमको, जलते अंगारों पर,

राहों में काँटे बिछे, आँधिया आये,
हम शूरवीर, तूफानों में मुस्काये;
यह शौर्य की धरती, यहाँ क्रांतियाँ पलतीं,
तमनाशक की ज्वालायें नित यहाँ पर जलती,
जिम्मेदारी है आज कर्णधारो पर।
चलना है हमको, जलते अंगारों पर॥

हम देश-प्रेम में ओत-प्रोत दिलवाले,
हर कदम-कदम तूफान उठाने वाले,
हम जल्लादों को मजा चखाने वाले;
हम अभिमानी को धूल चटाने वाले,
अभिमान हमें है सदा संस्कारों पर।
चलना है हमको, जलते अंगारो पर॥

है कौन धरा पर, हमें रोकने वाले,
हम धीर वीर, हैं अल्हड़ मतवाले;
हममें सागर-सी, है अथाह गहराई,
नदियों-सी गतिमान जिन्दगी पाई;
विश्वास नहीं है, हमको मिथ्या नारों पर।
चलना है हमको, जलते अंगारों पर॥

मिटा न पाये हस्ती कोई

मिटा न पाये हस्ती कोई,
आँधी या तूफान में;
स्वतन्त्रता का दीपक जलता,
हरदम हिन्दुस्तान में।

[१]

वीर भूमि है वीरों की यह,
यहाँ खून में आग है;
हर-हर बम का नाद यहाँ,
जौहर व्रत में अनुराग है;
अब तक पावन भस्म शेप है,
चित्तौड़ी मैदान में।
स्वतन्त्रता का दीपक जलता,
हरदम हिन्दुस्तान मे॥

[२]

इस धरती पर हुए वीरवर,
देश-प्रेम में मतवाले;
लक्ष्मीबाई वीर शिवा,
राणा प्रताप हिम्मतवाले;
याद रहेगा साहस उनका,
सदा राष्ट्र अभिमान में।
स्वतन्त्रता का दीपक जलता,
हरदम हिन्दुस्तान में॥

[३]

यहां क्रांति का अमर नाद है,
अद्भुत रक्त उबाल है;
स्वयं काल से भिड़ जाये,
वीरों का त्याग कमाल है;
बुझ पाएगी क्या वह ज्योति,
ऐसे मुल्क महान् मे।
स्वतन्त्रता का दीपक जलता,
हरदम हिन्दुस्तान में॥

वही सत्य का है पथिक

वही सुपथ का है राही,
जो गतिमान निरन्तर रहे यहाँ।

[१]

चल रहे सतत् जो साथी,
उन्हें सफलता वरण करे;
असफलता मिलती उन्हे,
जो बस रहे हाथ-पर-हाथ धरे;

वही सत्य का है पथिक,
मनोबल उच्चतर रहे जहाँ।
वही सुपथ का है राही,
जो गतिमान निरन्तर रहे यहाँ॥

[२]

आगे बढ़ते रहने से ही,
होती सुखमय जीवन यात्रा;
मिट जाता आलस्य कि—
जब बढ़ती जाये श्रम की मात्रा;

भूख त्रास से ग्रस्त किन्तु,
विश्वास स्वयं पर रहे जहाँ।
वही सुपथ का है राही,
जो गतिमान निरन्तर रहे यहाँ॥

[३]

सूर्य सदा शाश्वत गरिमामय,
तेज पुंज दिव्य महान्;
कभी मिटा पाये क्या उसको,
यह आँधी और तूफान;

सत्य सदा फलदायक है
यदि उस पर निरन्तर चले जहाँ।
वही सुपथ का है राही,
जो गतिमान निरन्तर रहे यहाँ ।।

गीत

मेरा स्वप्न सुनहरा साथी,
मुझ से विछुड़ गया है।

[१]

घूम-घूम कर चाँद, सूरज के आने से,
होता रहता जग में नव साँझ-सवेरा;
नियमित-सा क्रम सदा नियति का चलता रहता,
किन्तु खोया साथी कभी न लौटा मेरा:

जन्म-जन्म का प्रेमी,
मुझ से विछुड़ गया है।
मेरा स्वप्न सुनहरा साथी,
मुझ से विछुड़ गया है॥

[२]

सारी रात जागता हूँ उसकी यादों में,
दिल की धड़कन बाना बुनती चिन्ताओं का;
स्वप्न विखण्डित हुए, विश्वास पंगु हो रहे,
अव अन्तिम संस्कार हो रहा इच्छाओं का;

प्रेम - सूत्र का बंधन,
कैसे सिकुड़ गया है।
मेरा स्वप्न सुनहरा साथी,
मुझ से बिछुड़ गया है॥

[३]

वैसे तो आते-जाते लाखों ही जग में,
फर्क नहीं पड़ता कोई आये या जाये;
किन्तु नेत्र का तारा दिल का एक सहारा,
रूठ जाय तो दुखी हृदय कैसे बहलाये;

इकतारा बजने से
पहले ही टूट गया है।
मेरा स्वप्न सुनहरा साथी,
मुझ से बिछुड़ गया है॥

गीत

तेरे बिन कोई मेरा नही है।
तेरे बिन कोई अपना नही है॥

[१]

तन पर तेरे लाखों चोटें,
फिर भी तू तो खुशियाँ बाँटे;
तेरी हर इक राह सही है।
तेरे बिन कोई मेरा नहीं है॥

[२]

मैं तो इक छोटी-सी वेरी,
तू है सुख की नदिया गहरी;
नेह भरी तेरी नीति रही है।
तेरे बिन कोई मेरा नही है॥

[३]

मैं अँधियारा तू उजियारी,
मैं निसहाय हूँ तू रखवारी;
तू संग है तो जीत रही है।
तेरे बिन कोई मेरा नहीं है॥

गीत

धरती कहे पुकार के।
दीप जलाओ प्यार के॥
इक मैं हूँ, इक तुम हो, चलना है अविराम···।

[१]

वेला है अभियान की,
वेला है संधान की;
जन-जन को पुचकार के,
दीप जलाओ प्यार के;
इक मैं हूँ, इक तुम हो, चलना है अविराम···।

[२]

मंजिल चाहे दूर हो,
आँधी का दस्तूर हो;
गफलत को दुत्कार के,
दीप जलाओ प्यार के!
इक मैं हूँ, इक तुम हो, चलना है अविराम···।

[३]

राहों में तूफान हो,
संकट में गर प्राण हो;
नूतन मिशन निहार के,
दीप जलाओ प्यार के,
इक मैं हूँ, इक तुम हो, चलना है अविराम···।

गीत

जीवन का पथ टूट चुका।
क्रम जीवन का बीत चुका।।

[१]

नव - जीवन का उद्‌बोधन,
कर पंच तत्व का उन्मूलन;
दुनिया की इस बगिया में,
नव अंकुर जग में फूट चुका।
जीवन का पथ टूट चुका।।

[२]

जीवन में नव - जीवन है,
जिस में सत्य सनातन है;
मुक्ति का पथ पाने भू पर,
नभ से तारा टूट चुका।
जीवन का पथ टूट चुका।।

[३]

जो मुसाफिर आये जग में,
वो मुसाफिर रहे न जग में;
मुक्ति का पट खोल-खोल,
जग से नाता छूट चुका।
जीवन का पथ टूट चुका।।

गीत

राह में साथी छूट गया।
छूट गया सो छूट गया॥

[१]

यादों में रात और दिन आये,
जगा-जगा करवटें बदलाये,
शीशा-सा सपना टूट गया,
राह में साथी छूट गया।
छूट गया सो छूट गया॥

[२]

नभ में हैं अनगिन तारे,
मेरे न चमके भाग्य-सितारे,
भाग्य भास्कर डूब गया,
राह में साथी छूट गया।
छूट गया सो छूट गया॥

[३]

चाहा था फिर वो न आए,
भूल भी उनको ना भुलाये,
एक राह का राही रूठ गया,
राह में साथी छूट गया।
छूट गया सो छूट गया॥

[४]

हम यही अपराध कर बैठे,
कि उनको अपना कह बैठे,
कच्चे धागे-सा बन्धन टूट गया,
राह में साथी छूट गया।
छूट गया सो छूट गया॥

गीत

बादल बन कर खोजूं उनको।
नही मिले है साजन मुझको।।

पिया-मिलन को अँखियाँ तरसे,
जैसे सावन-भादों बरसे;
कौन दिलासा हो जीवन को।
बादल बनकर खोजूं उनको।।

मीठे स्वर मे कोयल बोले,
डार-डार दुल्हिन बन डोले;
दुःख देती है विरही जन को।
बादल बनकर खोजूं उनको।।

प्रियतम बिन सूना जग सारा,
रोता है दिल गम का मारा;
प्रिय बिन चैन मिले न मन को।
बादल बनकर खोजूं उनको।।

गीत

आओ हम बैठ के दर्द, मिल के बांट लें।
बन्धनों को काट, प्रेम पथ मिल के पाट लें।।

एक फूल बिना सारा बाग ही उदास है,
जिन्दगी वीरान जैसे एक नाग-पाश है,
प्यास का तूफान है, उफान भूख प्यास का,
बड़ा दश पूर्ण पाठ, आज के इतिहास का,
किन्तु हम सजीव है, तो पीर काट लें।
आओ हम बैठ के, दर्द मिल के बाँट लें।।

तप रही ये जिन्दगी, न छाँह है न राह है,
स्वार्थ पूर्ण लोग, किसे प्रीत की परवाह है,
घोर घनघोर घटा घेरती इन्सान को,
अमृत को भी न्यौतती है आज फिर श्मशान को,
किन्तु हम उदार है, तो राह पाट लें।
आओ हम बैठ के, दर्द मिल के बाँट लें।।

आफतों की आँधियों का गर्भपात हो यहाँ,
कुटिल क्रूर योजनाओं का निपात हो यहाँ,
राह काँटों से भरी, पगडण्डियां पथरा रही,
दीप्त अरुणिमा को कोई अमावस्या खा रही,
गर जिन्दगी महान् है तो दर्द छाँट लें।
आओ हम बैठ के, दर्द मिल के बाँट लें।।

एक अजगर धमनियों तक जहर भरते जा रहा,
बाज एक पक्षियों का ग्रास करते जा रहा,
बंधनों के प्राण का सम्बन्ध छिन्न हो गया,
आज मुक्ति मार्ग का भी अर्थ भिन्न हो गया,
हम शलाका पुरुष हैं तो भ्रष्टों को डाँट लें।
आओ हम बैठ के, दर्द मिल के बाँट लें॥

मुक्तक

प्रेम सदन में प्रेम महान्,
प्रेम में जन्मी मेरी ज़िन्दगी,
प्रेम में रहता मेरा जहान्,
प्रेम ही पूजा, प्रेम ही ईश्वर,
प्रेम ही है बस मेरा भगवान;

शिकवा न शिकायत है मुझको,
मन ने माना है इबादत तुझको,
लाऊँ हवा ऐसी जमीं पर;
जिसमें मुहब्बत की खुशबू आये मुझको,

जब भी मुझे तुम मिलो, खुल के मिलो,
फूल की तरह खिलो, खुल के खिलो,
आसमां चुप हो, खामोश हो हवा,
मिलो तो मस्त मन की तरह, दिलसे मिलो,

हर पल हर क्षण तुझे पाऊँ,
तुझे छोड़ मैं कहाँ जाऊँ;
तेरी ही बस चाह है मुझको,
तेरी चाहत चाह गुनगुनाऊँ;

भूख से मरे मिटे पूछता है कौन?
प्यास मे व्याकुल अगर पूछता है कौन?
दर-दर की ठोकरें मिली मंजिल है वेपते
जिये तो किस तरह जिये पूछता है कौन?

• • •